International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

ओड़िशा की धरोहर मादलापांजि

डॉ. ड़ी मोहिनी

भुवनेश्वर, ओड़िशा

सारांश

मादलापांजि ओड़िआ साहित्य और इतिहास की प्राचीन ग्रंथ है। यह पुरी स्थित श्री जगन्नाथ संस्कृति का वृतांत है। मध्यकालीन ओड़िशा के राजा महाराजाओं की गाथा को भी लिपिबद्ध किया गया। इस ग्रंथ को किसी एक सेवक ने नहीं लिखा इसमें अनेक लेखाकारों का लेख अलग-अलग जगह से प्राप्त है। तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक,धार्मिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का भी तथ्य इस ग्रंथ के जरिए ज्ञात होता है। उक्त पांजि में श्री जगन्नाथ संस्कृति, रीति-नीति परंपरा आदि का उल्लेख किया गया साथ ही राजा महारजाओं की कथा, दुश्मनों द्वारा आक्रमण और लूट, तत्कालीन दंतकथाओं का भी वर्णन है।

मूल शब्द : मादलापांजि, मध्यकालीन, श्री जगन्नाथ संस्कृति, दंतकथा

आसाम की बुरंजी, कश्मीर की राजतरंगिणी, सिंहल की दाठावंश की तरह ओड़िशा की मादलापांजि पुरी जगन्नाथ मंदिर की रीति-नीति, पूजा-पद्धति तथा उत्कल प्रदेश के राजा महाराजाओं के राज्य शासन और समकालीन राजनीति आदि का वर्णन किया गया है। अन्य पांजि में मुख्यतः तिथि, पचांग शुभ-अशुभ समय आदि की गणना की जाती है परंतु मादलापांजि पूर्णतः श्री मंदिर की एक सेवा, इसमें श्री जगन्नाथ संस्कृत की व्याख्या मिलती है। ऐतिहासिक मनमोहन चक्रवर्ती के अनुसार 'मादला' शब्द 'मुदल' से बना जिसका अर्थ सिल करना या बंद कर देना। श्रीमंदिर में पूजा विधि समाप्त कर प्रतिदिन उसे सिल किया जाता और उक्त कार्य को करनेवाला 'मुदिरथ' कहलाता है। मनमोहन जी के अनुसार 'राजाओं के द्वारा सिल मोहर या मुद के जरिए दी गई आदेशनामाओं को जिस पांजि में लिपिबद्ध किया जाता है उसे मादलापांजि कहते।'[1] ऐतिहासिक जगबंधु सिंह अपनी किताब 'प्राचीन उत्कल' में कहते हैं- "मर्दलाकार रूप में बंधा पांजि इसलिए यह मादलापांजि"[2]। मादला यानि मृदंग की तरह बंधा होने के कारण इसे अनेक विद्वान मादलापांजि नाम स्वीकार करते हैं। 'मादला' का शाब्दिक अर्थ हस्तपदविहीन शरीर श्री जगन्नाथ प्रभु हैं जिसके चलते इस प्रकार नाम पड़ा पर विश्वब्रह्मांड के रचयिता उनका हाथ पैर न होना यह विचार ग्रहणीय नहीं।

मादलापांजि को मुख्य रूप से तीन भागो में बाँटा गया है-

1. राजाओं के राजभोग की सूचना
2. जगन्नाथ मंदिर निर्माण का इतिहास तथा पूजा विधि और सेवकों का कर्तव्य।
3. मंदिर को केंद्र कर कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं की विवरणी और इससे संबंधित आय व्यय की सूची।

पांच प्रकार के कायस्थ जाति के लोगों का भी उल्लेख मिलता है-

1. कोठाकरण (Compiler) संकलनकर्ता
2. बइठिकरण (Asst. Compiler) सह-संकलनकर्त्ता
3. तढाउकरण (writer) लेखक लेखनकर्त्ता
4. देउलकरण (Enforcer) प्रवर्तक
5. पांजिआकरण (Preserver) संरक्षक

यह सभी नामकरण किसी व्यक्ति की नहीं, वंशानुगत प्रचलित उपाधियाँ हैं।

1. संकलनकर्ता- मादलापांजि में लिखन हेतु सूचनाएँ राजप्रसाद से संग्रह करते थे।
2. सह-संकलनकर्ता- सूचनाओं में महत्त्वपूर्ण वृत्तांतों को सम्मिलित करते थे।
3. लेखनकर्ता- तथ्यों को विभाग में बांटने का कार्य करते।
4. प्रवर्तक- हर दिन सभा मंडप (बेहरण) में पांजि पाठ करना।
5. सरक्षक- पांजि संरक्षित कर उनकी अधिक नकल प्रस्तुत करते थे। उसमें से एक नकल लेखनकर्त्ता को सौंपते दूसरा भंडारघर में सुरक्षित रखा जाता था।

पांजि में 5 भाग रखे गए हैं- I.राजखंजा II. देशखंजा III. कर्मांगी IV.दिनपांजि V.चकड़ा

I.राजखंजा - राजाओं की विशेष घटनाओं को लिखित रूप में रखते और यह प्रतिवर्ष पौषपूर्णिमा में राजाओं के वार्षिकोत्सव में पाठ किया जाता।

II.देशखंजा - इसमें दान-दक्षिणा, स्तावर और अस्तावर सम्पत्तियों की सूची होती है। आक्रमणकारियों द्वारा हो रहे लूट को भी लिपिबद्ध करते। इसे कोठाकरण के यहाँ रखा जाता।

III.कर्मांगी- श्री मंदिर के नित्य प्रतिदिन हो रहे रीति-नीति, पूजापाठ और अन्य मुख्य घटनाओं की विवरणी संकलित होती और इसे प्रतिदिन बेहरण में पाठ किया करते।

IV.दिनपांजि- यह लेख प्रतिवर्ष वैशाख संक्रांति दिन से आरंभ होती थी। 'दिव्यंज्ञ' उपाधिकारी श्रीमंदिर में पांजि पाठ किया करते।

V.चकडा- सिर्फ श्री क्षेत्र में मादला लिखित नहीं होती बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी इनके वंशधर पांजि रचना करते थे।

अन्य जगहों में भी उक्त पांजि को लिखा जाता है। फलस्वरूप इनमें अनेक मतभेद परिलक्षित हैं। सर्वप्रथम इसकी आलोचना स्टर्लिंग ने सन् 1822 में की थी। स्टर्लिंग इतिहास से अधिक भवानीचरण की बांग्ला

ग्रंथ 'पुरुषोत्तम चंद्रिका' को महत्त्व दिया। सं 1875 में ऐतिहासिक राजेंद्रलाल मित्र ने भी मादलापांजि की सहायता ली- "For the civil history of Orissa, our best guide is the Madalapanji or the annals of the temple of jaganath."[3] राजेंद्र कुमार जी के अनुसार यह ग्रन्थ सन् 1932 में प्रकाशित हुई। यह ग्रन्थ सन् 1940 में आलोचकों की दृष्टि आकर्षित कर पाई। आगे चलकर अनेक विद्वानों ने इसकी आलोचना की।

उक्त ग्रन्थ में तीन राजवंशो का उल्लेख मिलता है- केशरीवंश, गंगवंश और भोइवंश। "मादलापांजि केशरीवंश (सोमवंश) का शासनकाल शक-396 से शक-1054(सं474 - सं 1132) तक था। इस वंश में 65 राजाओं की सूचना मिलती है। इसमें भी मतभेद दिखाई देती है स्टर्लिंग ने 36 बताया, हंटर ने 44 और जगबंधु सिंह ने 88 संख्या बताई।"[4] निर्दिष्ट रचनाकार के द्वारा इस ग्रंथ की रचना नहीं हुई इसमें अनेक कम पढे-लिखे संपृक्त थे और इसकी प्रामाणिकता भी संदिग्ध है। जिसके चलते अनेक मतभेद दिखाई देते हैं। "गंगवंश में कूल 36 राजाओं की जानकारी प्राप्त होती है। इनमें से 12 जन सूर्यवंशी हैं और बाकी के 24 गंगवंशियों में से कुछ काल्पनिक भी हैं।"[5] भोइवंश से ही ओड़िशा इतिहास के तथ्य प्राप्त होते हैं। प्रो. प्रभात मुखर्जी ने अपनी पुस्तक 'The Gajapati Kings of Orissa' ग्रन्थ की रचना की जिसमें अनेक तथ्यों की प्रमाणिकता सिद्ध किया। मादलापांजि की शुरूआती समय के संदर्भ में अनेक मतभेद दिखाई देते हैं। हंटर साहेब ने 11वीं शताब्दी से आरंभ माना जबकि डॉ.आर्तवल्लभ महान्ति जी के मतानुसार 12वीं शताब्दी। प्रमुख भाषाविद डॉ. सुनीतिकुमार चाटर्जी दिनांक- दिसम्बर 25, 1964 कटक सहर में अनुष्ठित निखिल भारत बंग साहित्य सम्मिलन सभापति के रूप में मादलापांजि को 12वीं शताब्दी से प्रारम्भ माना और इसे ओड़िशा भाषा की प्राचीन गद्यलेख कहा। उनके शब्दों में-"It is believed to have started as early as the 12th century A.D., when the temple of jagannath at Puri was erected or rather rebuilt on the foundations of an earlier structure and slightly later than the completion of the 12th century may be the account given of this event"[6] निश्चित रूप से यह तय है कि मादलापांजि प्राचीन परंपरा की धरोहर है। इतिहासकार जगबंधु सिंह मादलापांजि संबंधित लेख सं 1929 'प्राचीन उत्कल' किताब में प्रकाशित किया। इस लेख के बाद बिहार-ओड़िशा प्रदेश के तत्कालीन शिक्षा विभाग निर्देशक फॉक्स साहेब ने डॉ. आर्तवल्लभ महान्ति के जरिए सं 1932 'प्राचीन गद्यपद्यादर्श' ग्रंथ संकलन करवाई। आगे चलकर सरकारी अनुदान प्राप्त यह कार्य सं 1940 में 'मादलापांजि' नामक ग्रंथ डॉ. आर्तवल्लभ महान्ति के सम्पादन में प्रकाशित किया गया। मादलापांजि की भाषा और रचना शैली किसी निर्दिष्ट काल की नहीं। यह अनेक राजनैतिक तथा सामाजिक उथल-पुथल का दस्तावेज है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. Madalapaanji, Surendra kumar Maharana, 2023,पृ-28
2. वही पृ-28
3. वही पृ-25

4. Odisha Patnatatva o anyanya prabandh , Padmashree Parmananda Acharya, p-248-258
5. वही पृ-32
6. वही पृ-42